

एक मित्र को मानसी सेवा का उपदेश

भक्तकोकिलजी एक मित्र को साथ लेकर सन्तों का दर्शन करने के लिये गये । मदनमोहनजी के मन्दिर के पास बंगाली महात्माओं का दर्शन करने के समय अपने मित्र को तो बाहर बिठा दिया और आप स्वयं भीतर गये । स्वामीजी ने सब महात्माओं को फल-फूल भेंट करके बड़ी नम्रता से दण्डवत् प्रणाम किया । उनके पूछने पर बताया-“मैं सिन्ध का रहने वाला गरीब गृहस्थ हूँ । आप सब सन्त हैं । मुझे ऐसा आशीर्वाद दीजिये कि मुझे प्रभु का सच्चा अनुराग प्राप्त हो ।” स्वामीजी की निर्मल श्रद्धा और अद्भुत नम्रता देखकर महात्मा बहुत प्रसन्न हुए और बड़े प्यार से मस्तक पर हाथ रखकर आशीर्वाद देने लगे- “श्रीकृष्ण मतिः श्रीकृष्णे मतिः श्रीकृष्णे मतिः !” श्रीस्वामीजी ने लौटकर अपने मित्र से कहा- “सन्त कृपा भरे बैठे हैं । दर्शन करके आशीर्वाद ले आओ ।” वह वहाँ गया और तुरन्त लौट आया और बोला-“स्वामीजी, उन लोगों ने तो आशीर्वाद दिया नहीं, उल्टे मेरे पाँवों में पड़ने लगे ।” श्रीस्वामीजी ने कहा - “ तुमने अपना बड़प्पन बताया होगा ।”

मित्र - मैंने अपने को साधु बताया ।

स्वामीजी - बस, यही कारण है । गुरुजनों के सामने सदा नम्र हाकर जाना चाहिये ।

एक दिन एकान्त में उसी मित्र ने प्रश्न किया कि -
“स्वामी, कृपा करके मेरे लिये कोई अन्तरंग भाव बतलाइये
जिसके अनुसार मैं युगल सरकार की सेवा करूँ ।”

साई ने कहा-“तुम यह भाव करो कि मैं युगल सरकार
के पुष्पोद्यान के माली का बालक हूँ । मेरा नाम मौलू है और
रोज सुन्दर-सुन्दर पुष्प चुनके, उन्हें सजाकर, माला बनाकर
राजमहल में ले जाता हूँ । वहाँ रनिवास के द्वारपर बालिका
श्रीखण्डिदासी मिलती है और मुझसे श्रृंगार सामग्री की डलिया
लेकर मुझे एक चपत रशीद कर देती है ।

मित्र बोले - “आप यहाँ तो मुझे चपत लगाते ही हैं,
वहाँ भी यही पुरस्कार मिलता रहेगा ?”

श्रीस्वामीजी का अभिप्राय यही था कि मधुर रस के जो
अन्तरंग भाव हैं उनमें एकाएक सबकी स्थिति नहीं हो सकती
सेवा छोटा बनकर शुरू की जाती है और कृपालु स्वामी अपने
विश्वासपात्र और सच्चे सेवक को स्वयं ही अन्तरंग बना लेते
हैं । इसीसे पहले किसी अन्तरंग मधुर भाव का उपदेश न करके
माली के बालक का भाव दिया गया ।